P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

वैश्विक पर्यावरण परिदृश्य और समकालीन हिन्दी कविता

चन्दा बैन
प्रोफेसर,
हिन्दी विभाग,
डॉ. हरीसिंह गौर
विश्वविद्यालय,
सगर, म.प्र., भारत

सारांश

मनुष्य के द्वारा प्राचीन काल से ही स्वयं से सम्बद्ध समस्त चीजों, विचारों और स्थानों इत्यादि से संदर्भित साहित्य का लेखन किया गया है। आधुनिक हिंदी साहित्य के माध्यम से समाज के यथार्थ और समसामयिक विषयों को उठाया जाने लगा। इसी क्रम में हिंदी साहित्य की विविध विधाओं में प्रकृति की विशेष रूप से उपस्थिति दर्ज की जाने लगी। कविता का जैसे ही समकालीन दौर में प्रवेश हुआ तो प्रकृति के समस्त अवयवों को लेकर कविता लिखने का प्रचलन प्रारंभ हुआ। इसी के साथ ही समस्त पर्यावरण भी कविता के विषय क्षेत्र की परिधि के अंतर्गत आ गया। हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं में अनेक तरह से पर्यावरण की उपस्थिति देखने को मिलती है। मानवी जीवन का संचालन उसके पर्यावरण पर ही निर्भर करता है। मिट्टी, जल, वायु, आकाश, अग्नि से मिलकर ही हमारी देह का बनना संभव होता है और ये सभी तत्व प्रकृति और पर्यावरण के ही अंश हैं। अतः मनुष्य की निर्मिति में पर्यावरण की महत्वपूर्ण भूमिका है। समकालीन कविता यथार्थ परिस्थितियों से जन्मी विचारवान कविता है। मध्यकालीन कविता या कुछ अन्य कालखण्डों की कविता दार्शनिक, शास्त्रीय और अन्य कई तरह के नियमों और दबावों में जकड़ी कविता थी परन्तु समकालीन कविता अपनी परिस्थितियों के अनुसार नये रूपाकार गढ़ती है और यथार्थ के धरातल पर आकर अपनी बात कहती है। इसलिए साढोत्तरी कविता का कवि विश्व में घट रही घटनाओं का दस्तावेज प्रस्तुत करता है। समकालीन दौर में पर्यावरण विश्व भर के लिए चिंतन का विषय है। अतः समकालीन हिंदी कविता में वैश्विक पर्यावरण परिदृश्य का विश्लेषण अत्यंत महत्व रखता है।

मुख्य शब्द : साहित्य, पर्यावरण, समकालीन कविता, वैश्विक परिदृश्य।

प्रस्तावना

साहित्य तथा अन्य कलाओं में मनुष्य की रचनात्मकता के साक्ष्य मिलते हैं। विभिन्न जीवनानुभव, परम्परा, समकालीन जीवन की समस्याओं आदि का स्पष्ट प्रभाव हम रचनात्मकता के विभिन्न अनुशासनों पर देखते हैं। ऐसे तमाम प्रत्यय, जिनसे सृजनात्मकता साकार होती है, मूल्यवान तो होते ही हैं, साथ ही जीवन से उनकी संबद्धता भी होती है। पर्यावरण ऐसे ही सृजन के अनिवार्य तत्वों में से एक है। हिन्दी साहित्य की सभी विधाओं में अनेक तरह से पर्यावरण की उपस्थिति देखने को मिलती है। पर्यावरण भले ही विज्ञान के एक अनुशासन की तरह हमारे सामने हैं लेकिन उसके एक–एक तत्व की हमारे जीवन में व्याप्ति उस पर हमारी आश्रितता एक अलग ही आत्मीय रिश्ता बनाती है। मानवी जीवन का संचालन उसके पर्यावरण पर ही निर्भर करता है। पर्यावरण ही उसका निर्माण करता है। हमारे धार्मिक, आध्यात्मिक सभी ग्रन्थों में चराचर जगत के सात्विक उपयोग और उसके संरक्षण हेतु कई नियम धार्मिक आचरण से जोड़ दिए गए, कमोवेश आज तक हम उनका पालन भी कर रहे हैं।

मिट्टी, जल, वायु, आकाश, अग्नि से मिलकर ही हमारी देह का बनना संभव होता है, जिसका उल्लेख रामचरितमानस में तुलसीदास ने भी किया है–''क्षिति, जल, पावक, गगन समीरा। पंच तत्व यह अधम सरीरा।।'' इन्हीं तत्वों से उपजी वनस्पतियाँ, जीव–जन्तु और फिर मनुष्य आपस में एक जीवन चक्र पूर्ण करते हैं और इनकी आपस की साझेदारी ही एक दूसरे के जीवन के अस्तित्व की अनिवार्य शर्त है। आज प्राकृतिक पर्यावरण में कहीं असंतुलन पैदा हुआ है और वह इस हद तक कि आज मनुष्य जीवन पर अनेक खतरों की बाढ़ सी लग गई है।

हमारा यह समय संवेदनहीनता के चलते ज्यादा अराजक छवि प्रकट कर रहा है। जिन चीजों से हमारा जीवन बना है, जिन चीजों के बिना हम रह नहीं सकते, उन सबके प्रति हम मनुष्यों में जागरूकता बोध तो लुप्त हो ही गया है साथ ही उनके प्रति अकारण लापरवाही हमारी आदत सी बन गई है।

भूमण्डलीकरण के इस युग में बढ़ते औद्योगिक और तकनीकि विकास के चलते साहित्य में 'कविता' इन परिस्थितियों से उत्पन्न तनावों को कम करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है। ''कविता वैयक्तिक रूप से हमारा संस्कार करती है। रूप संबंधी मनुष्य के आकर्षण को परितृप्त करती हुई उसके सौन्दर्यबोध को बढ़ाती है। वैयक्तिक तथा सामाजिक जीवन में छिपी विसंगतियों और विषमताओं के प्रति हमें भावनात्मक दृष्टि से सजग करती हुई सहानुभूति या संवेदना का दायरा बढ़ाती है।''[1]

समकालीन कविता यथार्थ परिस्थितियों से जन्मी विचारवान कविता है। मध्यकालीन कविता या कुछ अन्य कालखण्डों की कविता दार्शनिक, शास्त्रीय और अन्य कई तरह के नियमों और दबावों में जकड़ी कविता थी परन्तु समकालीन कविता अपनी परिस्थितियों के अनुसार नये रूपाकार गढ़ती है और यथार्थ के धरातल पर आकर अपनी बात कहती है। इसलिए साढोत्तरी कविता का कवि विश्व में घट रही घटनाओं का दस्तावेज प्रस्तुत करता है। ''इसमें दो मत नहीं है कि 1917 की बोल्शेविक क्रांति इस शताब्दी की सबसे बड़ी ऐतिहासिक घटना थी। साहित्य, संस्कृति, कला के क्षेत्र में सक्रिय संवेदनशील मनुष्यों को इस घटना ने गहरी अर्न्तदृष्टि प्रदान की। ×××। सोवियत संघ की स्थापना ने कविता की भारतीय अवधारणा को आधुनिक संवेदना से सजाया संवारा। ×××। इस शताब्दी में घटनाएँ और भी घटीं, पर उनमें से ज्यादातर दुर्घटनायें थीं। दो विश्व युद्ध, भारत–विभाजन और समूहों में थोड़े–थोड़े समय में विस्थापन, साम्प्रदायिक दंगे, भारत पर चीनी आक्रमण, ईराक पर अमेरिकी पूँजीवाद का अन्य यूरोपीय समर्थकों के साथ हमला, वियतनाम, दक्षिण अफ्रीका, तिब्बत की जनता का स्वातंत्र्य समर। विश्वव्यापी साम्यवाद, नस्लवाद और संकीर्ण धार्मिक कट्टरता के नये उभार से हमारे समय के कवियों का मन सदा आहत और उद्विग्न रहा है।''[2] इन समस्त घटनाओं का अंकन समकालीन कविता से प्राप्त होता है।

कविता किसी भी कालखण्ड, वातावरण, देशकाल में सहज मानवीय भावनाओं की अभिव्यक्ति है। वह लोक की भाव भूमि पर अपने आचरण और प्रभाव में अमानुषिक शक्तियों और प्रवृत्तियों के विरूद्ध सक्रिय रहती है। ''समकालीन कविता के सूक्ष्म विश्लेषण से यह तथ्य सहज ही उपलब्ध होता है कि मूल उत्स से लेकर सम्पूर्ण अभिव्यक्ति प्रक्रिया में वैचारिक तनावों का दखल सर्वोपरि हो गया है। भाव–कल्पना आदि शेष तत्वों की स्थिति अपेक्षतया गौंण हो गई है। सन् 1965 के बाद से वैचारिक सरोकार जीवन–परिवेश के समानान्तर ही कविता, में भी उत्तरोत्तर प्रभावी व्यापक और मुखर हो गए हैं। उक्त आधारों पर समकालीन कविता को विचार कविता की संज्ञा से अभिहित करना उपयुक्त ही होगा।''[3]

समकालीन कविता और पर्यावरण पर बात करने से पूर्व समकालीनता पर विचार करना अपेक्षित है। 'समकालीन' शब्द एक बहुव्याख्यायित किन्तु मतैक्य स्थापित न कर सका पद है। परन्तु मेरे विचार से 'बीसवीं शताब्दी के छठवें–सातवें दशक से लेकर अद्यतन समय' को हम समकालीन मान सकते हैं। कविता जब नई कविता नाम से मुक्त होकर छठवें–सातवें दशक की कविता या साढ़ोत्तरी कविता जैसी संज्ञाओं से आगे आती है, तब उसे 'समकालीन कविता' की संज्ञा से अभिहित किया गया। समकालीन कविता पर जब हम विचार करते हैं तो पूर्व पीठिका के रूप में हम अज्ञेय से ही इसकी शुरूआत करते हैं।

समकालीन कविता में पर्यावरण की चिंता की यदि बात करते हैं तो यह चिंता हमें 'अज्ञेय' के काव्य से समझना आवश्यक है। ''अज्ञेय की कविता का अर्थ शायद उस मछली में है जिसे सभी दिशाओं से सागर घेरता है। 'मछली' अर्थात् अस्तित्व या जिजीविषा जल के बाहर निकाल दी गई मछली, तड़पती छटपटाती और हाँफती है। क्या चाहती है वह जीना, मुक्ति। यही अज्ञेय की कविता की सही जमीन है।''[4] अज्ञेय का समस्त काव्य प्राकृतिक प्रतीकों से भरा पड़ा है सूर्यास्त, सागर मुद्रा, नदी के द्वीप, साँझ–सवेरा, हीरोशिमा आदि कविताओं में मानव और पर्यावरण के अटूट संबंधों को दर्शाती और सचेत करती हैं। नगरीय सभ्यता का विपरीत प्रभाव उनकी 'साँप' कविता में देखा जा सकता है। वहीं 'बावरा अहेरी' जैसी रचनाओं में कवि कहता है कि सूर्य का प्रकाश उसकी ऊष्मा प्रकृति में सतरंगी रंगों को बिखेर देता है परन्तु आधुनिक औद्योगिकीकरण के चलते कल–कारखानों की जहरीली धुंआ उगलती चिमनियां इतनी बड़ी समस्या के रूप में उभर रही हैं मानों सूर्य को चेतावनी दे रहीं हो, उसके प्रकाश को अवरूद्ध करना चाहती हैं। पर सूर्य हमारे ब्रह्माण्ड का इतना अनिवार्य तत्व, अपनी सम्पूर्ण माया से दैदीप्यमान दिखता है। वे प्रकृति के रूप में अर्चना करते दिखाई देते हैं यहाँ तक कि ईश्वरीय आराधना में भी एक पुण्य को आघात नहीं पहुँचाना चाहते 'साम्राज्ञी का नैवेध दान' कविता की कुछ पंक्तियाँ– हे महाबुद्ध/मंदिर में आई हूँ रीते हाथ/फूल मैं ला न सकी/औरों का संग्रह तेरे योग्य न होता/×××/जो कली खिलेगी जहाँ खिली/जो फूल खिला जहाँ है/जो भी सुख/जिस भी डाली पर हुआ पल्लिवित पुलकित/मैं उसे वहीं पर/अक्षत, अनघृात, अस्पृष्ट/अनाबिल/अर्पित करती हूँ तुझे/हे महाबुद्ध।''[5]

समकालीन कविता के एक और कवि नागार्जुन लोकजीवन के कवि हैं। ग्रामीण परिवेश और उनकी परिस्थितियों पर उन्होंने काव्य रचना की। उन्हें अपनी धरती का मोह बार–बार उमड़ता है और वे उस परिवेश को जीना चाहते हैं। 'अकाल और उसके बाद' शीर्षक कविता में वास्तविक दृश्य उभर कर सामने आता है कि प्रकृति और मानव के अन्योन्याश्रित संबंध देखिए–

कई दिनों तक चूल्हा रोया, चक्की रही उदास
कई दिनों तक काली कुतिया सोई उनके पास
कई दिनों तक लगी भीत पर छिपकलियों की गश्त
कई दिनों तक चूहों की भी हालत रही शिकस्त
दाने आये घर के अंदर कई दिनों के बाद
धुंआ उठा आँगन के ऊपर कई दिनों के बाद
चमक उठी घर–भर की आँखें कई दिनों के बाद
कौए ने खुजलाई पाँखे कई दिनों के बाद।।

''नागार्जुन ने इस धरती को विनाशक वैज्ञानिक अस्त्रों से बचाने की इच्छा व्यक्त की है। युद्धों का विरोध करते हुए वे लिखते हैं–

''पौधों या पेड़ों में कभी नहीं फली हैं छुटियाँ
कन्द की जड़ से कभी नहीं निकला है विस्फोटक बम
चर कर घास गाय ने दूध के बदले नहीं दिया इलाइल
सोख करइस धरती का जहर नहीं बरसा कभी भी बादल।''[6]

''नरेश सक्सेना की कविता से जीवन मूल्यों को बचाने वाली समस्त भौतिक उपस्थितियों और लौकिक विश्वासों के साथ रची गई है। . . . जिंदा रहने के लिए ऑक्सीजन नमी तथा साँस लेने के लिए पर्यावरण धुंए के साथ उठते कार्बनडाइ–ऑक्साइड तथा रत्नों के रहस्यों से भरे हृदय वाली पृथ्वी तथा ईंट कंक्रीट, सीमेन्ट, गिट्टी, गारा, भट्टियों को लेकर किए गए कवि के प्रेक्षण इतने नवीन हैं कि वे कवि के संवेदन सहकार से एक नये दृष्टिकोण का सृजन करते हैं। स्खलित होते मानव–मूल्यों और पर्यावरण के प्रति कवि चिंता का इजहार करते हैं।''[7] उपभोक्तावादी प्रवृत्ति ने मनुष्य को वृक्षों के प्रति संवेदनहीन बना दिया। एक छोटी कविता के माध्यम से कवि की संवेदना देखिए कि यदि में इस प्रकृति में एक पेड़ बचा सकूँ तो यह मेरे जीवन की बड़ी उपलब्धि होगी वे लिखते हैं–अंतिम समय जब कोई नहीं जायेगा साथ/एक वृक्ष जायेगा/अपनी गौरैयों–गिलहरों से बिछुड़कर/साथ जायेगा एक वृक्ष/अग्नि में प्रवेश करेगा वही मुझसे पहले/कितनी लकड़ी लगेगी/श्मशान की टालवाला पूँछेगा/गरीब से गरीब भी सात मन तो लेता ही है।

लिखता हूँ अंतिम इच्छाओं में/कि बिजली के दाह घर में हो मेरा संस्कार/ताकि मेरे बाद/एक बेटे और एक बेटी के साथ/एक वृक्ष भी बचा रहे संसार में/पर्यावरण और पेड़ों के प्रति संवेदना का यह अप्रतिम उदाहरण है।

''भूमण्डलीकरण के इस दौर में पूरी दुनिया में बहुत तेजी से परिवर्तन हो रहे हैं विदेशी कम्पनियों के आने से न केवल शहर बल्कि गाँव का भी रूप बदलता दिखाई दे रहा है। यह बदलाव इतना तेज और आकस्मिक है कि सामान्य आदमी इससे तालमेल नहीं बैठा पा रहा। ×××। इस पूँजीवादी व्यवस्था ने व्यक्ति को उसकी जड़ों से अलग कर दिया है और हर मकान, दुकान में परिवर्तित होता दिखाई दे रहा है।''[8] 'अरुण कमल' के काव्य संग्रह 'नये इलाके में' संग्रहित पहली कविता भी इसी शीर्षक से है कुछ पंक्तियाँ दृष्टव्य हैं– ''इन नये बसते इलाकों में/जहाँ रोज बन रहे हैं नये–नये मकान/मैं अक्सर रस्ता भूल जाता हूँ/धोखा दे जाते हैं पुराने मिशन/×××। यहाँ रोज कुछ बन रहा है/रोज कुछ घट रहा है/यहाँ स्मृति का भरोसा नहीं/एक ही दिन में पुरानी पड़ जाती है दुनिया/जैसे बसंत का गया पतझड़ को लौटा हूँ/जैसे वैशाख का गया भादों में लौटा हूँ।''[9]

'कुंवर नारायण' की कविताओं में शुरू से ही प्रकृति के प्रति आकर्षण मिलता है। 'चक्रव्यूह' और 'परिवेश : हम तुम' बहुत सी कविताओं को इसके परिवेश में देखा जा सकता है[10]–

यहाँ एक पेड़ था/जहाँ एक फाँक है/बिजली गिरी होगी/ठीक इसके ऊपर/यहाँ एक नीड़ था/जहाँ अब राख है/रोशनी हुई होगी/चारों तरफ जंगल में यहा एक स्वप्न था जहाँ अब शांति है।

कुंवर नारायण कई कविताओं में प्रकृति का आह्वान करते प्रतीत होते हैं। अशोक वाजपेयी के काव्य में समकालीन दवाबों को स्पष्ट रूप से देखा जा सकता है। पर्यावरण की चिंता उनके सभी संग्रहों में वर्णित है। अभी हाल ही में प्रकाशित काव्य संग्रह 'कहीं कोई दरवाजा' की पंक्ति है ''प्रार्थना करो कि हरे पेड़ और अधिक हरे रहें। ताकि जीव जन्तुओं का जीवन बना रहे।

और एक कविता की पंक्तियाँ देखिए– खरगोश अंधेरे में/धीरे–धीरे कुतर रहे हैं पृथ्वी/पृथ्वी को लेकर धीरे–धीरे ले जा रही है चीटियाँ/अपने डंक पर साधे हुए पृथ्वी को/आगे बढ़ते जा रहे हैं बिच्छू। आज के बाजारीकरण और प्रकृति के दोहन में लगे लोगों को पृथ्वी का मूल्य केवल भोग के लिए अधिक धन सम्पन्नता के लिए किया जा रहा है।

''महानगरों में स्मृतियों और अनुभव के बल पर जो कविता लिखी जा रही है वह कवियों की कवियों के लिए होकर रह गई। ×××। शलभ जाम सिंह की काव्य दृष्टि में बाजारू सभ्यता और साम्राज्यवाद की समर्थक नई अर्थव्यवस्था की विसंगतियाँ और विडम्बनाएँ समाहित हैं।''[11] वे लिखते हैं–

तकनीकी नाकेबंदी की जकड़ में है गंगा
यमुना के गले में उग रही है कंकणों की फसल
समुद्र को अलविदा कहने पर मजबूर की जा रही है नर्मदा
गोमुख का भूगोल टेढ़ा हो रहा है
हरिद्वार का भूगोल टेढ़ा हो रहा है। (उन हाथों से परिचित हूँ मैं, पृ.18)

शलभ जाम सिंह विश्व पर्यावरण की चिंता करते हैं इस चिंता में आम जन की भी चिंता शामिल है। शलभ पृथ्वी के संकट को संवेदनात्मक धरातल पर महसूस करते हैं और वे स्वयं को पृथ्वी के विनाश में जिम्मेदार मानते हैं।

मदन कश्यप के काव्य संग्रह 'लेकिन उदास है पृथ्वी' में समूची पृथ्वी की अनुगूँज कवि के हृदय में छिपी हुई है। ''अमेरिका निकारागुआ, इथोपिया की भूख, डालर और पृथ्वी दिवस, मदन कश्यम की विश्व वेदना की कविताएँ हैं। विश्व पूँजीवाद के वास्तविक चरित्र को उजागर करने के उद्देश्य से इनकी रचना हुई है। ×××। पृथ्वी दिवस का आयोजन जले पर नमक छिड़कने की तरह है। जिनकी आकांक्षाएँ छेद रहीं है/ओजोन की रक्षा परत/पर्वतों की छातियाँ/जिनकी तृष्णा पी जाती

है/सारी नदियों का स्वच्छ जल/अम्ल मेघ बनकर बरसती हैं जिनकी लालसा वही सभ्य और महान लोग/हथियारों के सौदागर/अचानक बनाने लगे है/पृथ्वी को बचाने की योजनायें/×××। वे जंगल काटकर भू–स्खलन पर शोध करते हैं, वे सागर में भरते हैं जहर/नदियों में कचड़े/वे मेढ़कों की रान और बंदरों के सिर के साथ/करते हैं हमारी मनुष्यता का सौदा।''[12]

इस प्रकार मदन कश्यम के काव्य पर्यावरण प्रदूषण का विश्वव्यापी संकट मानव सभ्यता को खतरे में डाल देने की चिंता से अनुप्रेरित है।

वे तत्व जो हमारा जीवन संभव करते हैं उन्हें हमने उपभोग की तरह बरतना शुरू किया। हमारे इस उपक्रम में प्रोद्यौगिकी सभ्यता ने भरपूर सहयोग किया। नतीजा वह समय भी शीघ्र ही आ पहुँचा जब हमें इन पर्यावरणीय तत्वों को बचाने की कवायत करना पड़ी। इन सभी चिंताओं को हम तमाम वैचारिकी के साथ समकालीन कविता में देखते हैं। आज एकदम नया कवि भी इस चिंता में कविता लिख रहा है ''कम हो रही हैं चिड़ियाँ/गुम हो रही हैं गिलहरियाँ/अब दिखती नहीं है तितलियाँ/लुप्त हो रहीं है जाने कितनी प्रजातियाँ/कम हो रहा है/धरती के घड़े में जल/पौधों में रस/अन्न में स्वाद/कम हो रहा है/जमीन में उपजाऊपन/हवा में ऑक्सीजन/सब कुछ कम हो रहा है/जो जरूरी है जीने के लिए/मगर चुप रहो/क्योंकि विकास हो रहा है।''[13]

निष्कर्ष

साहित्य लेखन की विस्तृत परम्परा के अवलोकन से यह तथ्य तो स्पष्ट है कि साहित्य के माध्यम से मनुष्य की व्यक्तिगत और सामाजिक सभी समस्याओं और समाधानों का प्रकटन किया जा सकता है। समकालीन दौर में पर्यावरण असंतुलन की समस्या सम्पूर्ण विश्व की अर्थात वैश्विक स्तर की समस्या है। इसके समाधान के लिए विश्व में विभिन्न स्तरों से कार्य चल रहा है। वास्तव में यह प्रशंसनीय कार्य है कि हिंदी साहित्य के माध्यम से मनुष्य के जीवन में पर्यावरण की भूमिका को निर्दिष्ट करने का प्रयास किया जा रहा है। समकालीन कवियों ने पर्यावरण से सम्बन्धित विविध पक्षों को उद्घाटित किया है। मनुष्य और पर्यावरण के भावनात्मक सम्बन्ध को भी समकालीन कवियों के द्वारा रेखांकित किया गया है।

इस प्रकार समकालीन कविता के सभी महत्वपूर्ण कवियों ने किसी न किसी रूप में पर्यावरणीय चिंताओं पर केन्द्रित कविताएँ लिखी हैं। इन कविताओं का दायरा अत्यंत विस्तृत है व सचमुच पर्यावरण को सहेजने के तत्पर भाव की ओर प्रेरित करने वाला है।

पाद टिप्पणी

1. *संपा. बलदेव वंशी – समकालीन कविताः विचार कविता में (डॉ. चन्द्रकांत बांदिवडेकर का लेख), पराग प्रकाशन, दिल्ली, पृ.144*
2- *डॉ. रेवती रमण – समकालीन कविता का परिप्रेक्ष्य, नवनीत प्रकाशन इलाहाबाद, पुस्तक की प्रस्तावना से पृ. II-III*
3. *संपा. बलदेव वंशी – समकालीन कविताः विचार कविता में, पराग प्रकाशन, दिल्ली, प्रस्तावना से*
4. *विश्वनाथ प्रसाद तिवारी – समकालीन कविता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.09*
5. *संपा. विद्या निवास मिश्र – अज्ञेय प्रतिविधि कवितायें एवं जीवन परिचय, प्रकाशन राजपाल एण्ड संस, नई दिल्ली, पृ.55*
6. *विश्वनाथ प्रसाद तिवारी – समकालीन कविता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.64*
7. *संपा. किशन कालजयी – संवेद पत्रिका, जुलाई 2013, स्वामी प्रकाशन, दिल्ली, पृ.24*
8. *वही, पृ.106*
9. *अरूण कमल – नये इलाके में, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली, 1906, पृ.13*
10. *विश्वनाथ प्रसाद तिवारी – समकालीन कविता, राजकमल प्रकाशन, नई दिल्ली, पृ.131*
11. *डॉ. रेवती रमण – समकालीन कविता का परिप्रेक्ष्य, नवनीत प्रकाशन इलाहाबाद, पुस्तक की प्रस्तावना से पृ. 43*
12. *वही, पृ.161*
13. *संपा. विष्णु नागर – शुक्रवार साहित्य वार्षिकी 2014, प्रकाशक नेहरू प्लेस, नई दिल्ली, पृ.179 राजेन्द्र राजन की कविता*